लेखक: बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर

श्रम विभाजन और जाति प्रथा

पाठ का सार : भारत में जाति प्रथा के पोषकों की कमी नहीं है।जाति प्रथा के समर्थक इसके अनेक कारण बताते हैं। उनका मानना है कार्य-कुशलता के लिए श्रम विभाजन जरूरी है। जाति प्रथा श्रम विभाजन का दूसरा रूप है। परंतु श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन भी कर देती है जाति प्रथा। जाति प्रथा श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन तो है ही,साथ-ही-साथ मनुष्य को एक दूसरे से ऊँचा-नीचा भी बनाता है। जाति प्रथा स्वाभाविक श्रम विभाजन नहीं, क्योंकि इसमें व्यक्ति की रुचि का ध्यान नहीं रखा जाता, बल्कि बच्चे के माँ के गर्भ में आते ही उसकी जाति व व्यवसाय निश्चित कर दियाजाता है।

जाति प्रथा द्वेषपूर्ण व्यवसाय निर्धारण नहीं है। यह व्यक्ति को एक पेशे से बाँध देता है, चाहे पेशा अनुपयुक्त ही क्यों न हो जाए, भूखे मरने की नौबत क्यों न आ जाए। आधुनिक युग में तकनीकी के विकास के साथ कई बार व्यवसाय बदलने की जरूरत पड़ सकती है, परंतु जाति प्रथा पेशा बदलने की अनुमतिनहीं देता। इससे बेरोजगारी की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। पेशे में रुचि न होने पर व्यक्तिअरुचि से काम करता है और जो काम अरुचि से किया जाता है, उसे कुशलता से नहीं किया जाता। इससे अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है।

मेरी कल्पना का आदर्श समाज

लेखक के अनुसार जाति प्रथा के विरोध में एक आदर्श समाज बनना चाहिए। यह आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता,भ्रातृता पर आधारित होगा। किसी भी आदर्श समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए, जिससे परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक संचारित होना चाहिए। आदर्श समाज में बहुविधि हितों में सब का भाग होना चाहिए। इसी का नाम भाईचारा है। इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है। लोकतंत्र शासन की पद्धति नहीं है, बल्कि यह एक सामूहिक जीवनचर्या की रीति है। लोकतंत्र में अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव होना चाहिए।

जाति प्रथा के पोषक जीवन,शारीरिक-सुरक्षा तथा संपत्ति के अधिकार की स्वतंत्रता को तो स्वीकार कर लेंगे, परंतु ये मनुष्य को सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता नहीं देंगे। क्योंकि इस स्वतंत्रता का अर्थ है अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता व यह स्वतंत्रता जाति प्रथा के पोषक लोग

नहीं देंगे।ये एक प्रकार की दासता ही है।दासता केवल कानूनी ही नहीं होती। कुछ लोग दूसरे लोगों को निर्धारित व्यवहार व कर्तव्य का पालन करने के लिए विवश करते हैं,ये एक प्रकार की दासता ही है। उदाहरण के लिए जाति प्रथा की तरह ऐसे वर्ग होना संभव है,जहाँ कुछ लोगों को अपनी इच्छा के विरुद्ध पेशे अपनाने पड़ते हैं।

लेखक आगे बात "समता" की करते हैं। फ्रांसीसी क्रांति के नारे में समता शब्द विवाद का विषय था। समता के आलोचकों का मानना है कि सभी मनुष्य बराबर नहीं होते। लेखक के अनुसार समता तीन बातों पर निर्भर करती है।1)शारीरिक वंश परंपरा 2) सामाजिक उत्तराधिकार अर्थात् सामाजिक परंपरा के रूप में माता-पिता की कल्याण कामना, शिक्षा तथा वैज्ञानिक ज्ञानार्जन आदि सभी उपलब्धियाँ3)मनुष्य के अपने प्रयत्न।इन तीनों दृष्टियोंसे मनुष्य समान नहीं होते।

व्यक्ति विशेष के दृष्टिकोण से,असमान प्रयत्न के कारण,असमान व्यवहार अनुचित नहीं। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता का विकास करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। यदि मनुष्य प्रथम दो के आधार पर असमान है तो क्या उसके साथ भिन्न व्यवहार करना चाहिए? उन लोगों के साथ ही अच्छा व्यवहार किया जाएगा जो उच्च कुल में जन्मे हैं,जिन्हें श्रेष्ठ शिक्षा मिली है, जिन्हें पारिवारिक यश प्राप्त हुआ, जिनके पास धन संपदा है। सुविधा संपन्न के साथ उत्तम व्यवहार ठीक निर्णय नहीं है। मनुष्य को समान अवसर मिलने चाहिए। जब सबको समान अवसर मिलेंगे, तभी उसकी प्रतिभा की पहचान होगी। इसलिए सबको समान अवसर और समान व्यवहार उपलब्ध करवाना चाहिए।

एक राजनीतिज्ञ बहुत बड़ी संख्या में लोगों से मिलता है। राजनीतिज्ञ के पास न समय होता है और नवो सब को जानता है। राजनीतिज्ञ को सबकी आवश्यकताओं और क्षमता के आधार पर सबसे अलग-अलग व्यवहार नहीं करना चाहिए, अपितु मानवता के दृष्टिकोण से राजनीतिज्ञ का व्यवहार समतापूर्ण होना चाहिए।

VASUNDHARAHINDI.COM

निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :-

(एक)

जाति प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्व निर्धारण ही नहीं करती, बल्कि मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध भी देती है। भले पेशा अनुपयुक्त या अप्रयाप्त होने के कारण वह भूखों मर जाए। आधुनिक युग में यह स्थितिप्रायः आती है, क्योंकि उद्योग-धंधों की प्रक्रिया व तकनीक में निरंतर विकास और कभी-कभी अकस्मात परिवर्तन हो जाता है, जिसके कारण मनुष्य को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है और यदि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मनुष्य को अपना पेशा बदलने की स्वतंत्रता न हो, तो इसके लिए भूखों मरने के अलावा क्या चारा रह जाता है? हिंदू धर्म की जाति प्रथा किसी भी व्यक्ति को ऐसा पेशा चुनने की अनुमति नहीं देती है, जो उसका पैतृक पेशान हो, भले ही वह उसमें पारंगत हो। इस प्रकार पेशा परिवर्तन की अनुमति न देकर जाति-प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण बनी हुई है।

प्रश्न 1)लेखक के अनुसार जाति प्रथा में क्या कमियाँहैं?
उत्तर:जाति प्रथा में अनेक कमियाँ हैं। जाति प्रथा जन्म से ही मनुष्य का पेशा निर्धारित कर देती है।जाति प्रथाव्यक्ति को किसी भी कीमत पर पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती, चाहे व्यक्ति बेरोजगार ही क्यों न हो जाए।

प्रश्न 2)मनुष्य अपना पेशा क्यों बदलना चाहता है?
उत्तर: उद्योग धंधों की तकनीक का निरंतर विकास होरहा है। इससे कई बार उद्योग धंधे अकस्मात परिवर्तित हो जाते हैं। ऐसे में व्यक्ति को अपना पेशा बदलने की आवश्यकता होती है।

प्रश्न 3)जाति प्रथा के कारण पेशानबदलने देने का क्या परिणाम होता है?
उत्तर: जाति प्रथा के कारण व्यक्ति को अपना पेशा बदलने की अनुमति नहीं होती। तकनीक बदलने के बाद भी व्यक्ति अपने पुराने पेशे से जुड़ा रहता है। परिणाम स्वरूप बेरोजगारी बढ़ती है, भुखमरी बढ़ती है।

प्रश्न 4)जाति प्रथा बेरोजगारी का प्रमुख कारण है। कैसे?
उत्तर : जाति प्रथा पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती। तकनीक बदलने और पेशे की माँग न रहने की स्थिति में व्यक्ति बेरोजगार हो जाते हैं और एक समय ऐसा आता है कि भुखमरी की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

(दो)

मेरा आदर्श-समाज स्वतंत्रता, समता,भ्रातृतापर आधारित होगा। क्या यह ठीक नहीं है,भ्रातृता अर्थात् भाईचारे में किसी को क्या आपत्ति हो सकती है? किसी भी आदर्श-समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए, जिससे कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे तक संचारित हो सके। ऐसे समाज के बहुविधि हितों में सब का भाग होना चाहिए तथा सबको उनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सामाजिक जीवन में अभाव संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिए। तात्पर्य यह कि दूध-पानी मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है, और इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है। क्योंकि लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति नहीं है, लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवनचर्या की एकरीतितथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। इनमें यह आवश्यक है कि अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो।

प्रश्न 1)आंबेडकर के अनुसार आदर्श समाज क्या है?

उत्तर: आंबेडकर के अनुसार आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता और भाईचारे पर आधारित होना चाहिए। आदर्श समाज गतिशील होना चाहिए, जिससे समाज में होने वाले परिवर्तन एक छोर से दूसरे छोर तक होने चाहिए।

प्रश्न 2)लेखक ने लोकतंत्र किसे कहा है?

उत्तर : भाईचारे का दूसरा नाम लोकतंत्र है। लोकतंत्र केवल शासन की पद्धति नहीं है, बल्कि सामूहिक जीवन जीने की एक विधि है तथा समाज के अनुभवों का आदान-प्रदान है। लोकतंत्र में अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भावहोनाआवश्यक है।

प्रश्न 3)लेखक के अनुसार समाज की गतिशीलता क्या है?

उत्तर : गतिशील समाज में यदि कोई परिवर्तन हो तो वह समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक हो। समाज के बहुविधि हितों में सबका समान भाग होना चाहिए तथा सबकोसबकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए।

प्रश्न 4) लोकतंत्र में व्यक्ति के साथ कैसा व्यवहार किया जाना चाहिए?

उत्तर : लोकतंत्र में भाईचारे की भावना प्रधान होती है तथा अपने साथियों के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव होता है।

(तीन)

जाति-प्रथा के पोषक जीवन, शारीरिक तथा संपत्ति के अधिकार की स्वतंत्रता को तो स्वीकार कर लेंगे, परंतु मनुष्य को सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता देने के लिए जल्दी तैयार नहीं होंगे। क्योंकि इस प्रकार की स्वतंत्रता का अर्थ होगा अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता किसी को नहीं है।अतः उसका अर्थ उसे दासता में जकड़ कर रखना होगा, क्योंकि 'दासता' केवल कानूनी पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता।'दासता' में वह स्थिति भी सम्मिलित है, जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है। उदाहरणार्थ, जाति प्रथा की तरह एक वर्ग होना संभव है,जहाँ कुछ लोगों को अपनी इच्छा के विरुद्धपेशे अपनाने पड़ते हैं।

प्रश्न 1)जाति प्रथा के पोषक किसे स्वीकार करते हैं और किसे नहीं?

उत्तर : जाति प्रथा के पोषक लोग जीवन, शारीरिक तथा संपत्ति के अधिकार की स्वतंत्रता को स्वीकार करते हैं।ये लोग सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता स्वीकार नहीं करते।

प्रश्न 2) जाति प्रथा के पोषक सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता स्वीकार क्यों नहीं करते?

उत्तर : सक्षम एवं प्रभावशाली प्रयोग की स्वतंत्रता को जाति प्रथा के पोषक इसलिए स्वीकार नहीं करते क्योंकि ऐसा करने का अर्थ है व्यक्ति को अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता देना।वो तो व्यक्ति को दासता में जकड़ कर रखना चाहते हैं।

प्रश्न 3) लेखक ने दासता किसे कहा है?

उत्तर : दासता का अर्थ है कुछ लोगों को दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवहार और कर्तव्य का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है अर्थात् कुछ लोगों द्वारा अपनी इच्छा के विरुद्ध पेशे अपनाना ही दासता है।

प्रश्न 4) कानूनी पराधीनता न होने पर भी दासता होती है। कैसे?

उत्तर : जब व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार अपना व्यवसाय नचुन सके- यह एक प्रकार की दासता है। यह कानूनी पराधीनता न होते हुए भी दूसरों द्वारा थोपी गई एक प्रकार की पराधीनता यादासता ही है।

(चार)

एक राजनीतिज्ञ पुरुष का बहुत बड़ी संख्या से पाला पड़ता है। अपनी जनता से व्यवहार करते समय, राजनीतिज्ञ के पास न तो इतना समय होता है,न प्रत्येक के विषय में इतनी जानकारी ही होती है, जिससे वह सबकी अलग-अलग आवश्यकताओंतथा क्षमताओं के आधार पर वांछित व्यवहार अलग-अलगकर सके। वैसे भी आवश्यकताओंऔर क्षमताओं के आधार पर भिन्न व्यवहार कितना भी आवश्यक तथा औचित्यपूर्ण क्यों न हो,'मानवता' के दृष्टिकोण से समाज दो वर्गों व श्रेणियों में नहीं बाँटा जा सकता। ऐसी स्थिति में, राजनीतिज्ञ को अपने व्यवहार में एक व्यवहार्य सिद्धांत की आवश्यकता रहती है और यह व्यवहार्य सिद्धांत यही होता है, कि सब मनुष्यों के साथ समान व्यवहार किया जाए। राजनीतिज्ञ यह व्यवहार इसलिए नहीं करता कि सब लोग समान होते, बल्कि इसलिए कि वर्गीकरण एवं श्रेणीकरण संभव होता।

इस प्रकार 'समता' यद्यपि काल्पनिक जगत की वस्तु है, फिर भी राजनीतिज्ञ को सभी परिस्थितियों को दृष्टि में रखते हुए, उसके लिए यही मार्ग भी रहता है, क्योंकि यही व्यावहारिक भी है और यही उसके व्यवहार की एकमात्र कसौटी भी है।

प्रश्न 1)राजनीतिज्ञ का सबसे कैसाव्यवहार होना चाहिए और क्यों?

उत्तर : एक राजनीतिज्ञ को सबसे समता का व्यवहार करना चाहिए, क्योंकि उसका बहुत बड़ी संख्या से पाला पड़ता है।

प्रश्न 2) लेखक ने समता को काल्पनिक जगत की वस्तु क्यों कहा है?

उत्तर :लेखक का कहना है कि समता काल्पनिक जगतकीवस्तु है, क्योंकि सब की आवश्यकताएँऔर क्षमताएँ समान नहीं होती। इसी आधार पर सब समान नहीं हो सकते। इसीलिए समता काल्पनिक जगत की वस्तु है।

प्रश्न 3)लेखक ने किस सिद्धांत को व्यवहार्य सिद्धांत कहा है?

उत्तर: सबके साथ समान व्यवहार किया जाए, यही व्यवहार्य सिद्धांत है।

प्रश्न 4) मानवता के आधार पर क्या उचित है?

उत्तर : यह सच है आवश्यकताएँ और क्षमताएँहर व्यक्ति की अलग-अलग होती हैं, परंतु इस आधार पर उनसे अलग-अलग व्यवहार करना उचित नहीं है, क्योंकि मानवता के दृष्टिकोण से समाज को अलग-अलग वर्गों में बाँटनाउचित नहीं है।

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1)जाति-प्रथा को श्रम-विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर ने क्या तर्क दिया है?

उत्तर : जाति-प्रथा श्रम-विभाजन का एक रूप नहीं है, क्योंकि जाति प्रथा में श्रम-विभाजन अस्वाभाविक है।माँ के गर्भ में आते ही बच्चे की जाति व व्यवसाय निर्धारित हो जाता है। तकनीक बदलने पर, व्यवसाय में अरुचि होने पर भी व्यक्ति को अपना व्यवसाय बदलने की अनुमति नहीं होती। ऐसे में बेरोजगारी और भूखा मरने की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

प्रश्न 2)जाति-प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण कैसेबनती जा रही है? क्या यह स्थिति आज भी है?

उत्तर :जाति-प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी और भुखमरी का इसलिए कारण बन जाती हैक्योंकिजाति-प्रथा जन्म के साथ ही व्यक्ति का पेशा निर्धारित कर देती है। तकनीक बदल जाने पर या समय के साथ पेशा विशेष उपयोगी न रहने पर भी व्यक्ति को पेशा बदलने की अनुमति नहीं होती।परिणामस्वरुप उस पेशे से जुड़े लोग बेरोजगार हो जाते हैं और भुखमरी का शिकार हो जाते हैं।

आज परिस्थितियाँ बदल गई हैं। आज व्यक्ति के लिए जरूरी नहीं कि वह वही पेशाअपनाए, जो उसे जन्म के साथ प्राप्त हुआ है। आज व्यक्ति अपनी इच्छा का पेशा अपना सकता है।

प्रश्न 3)लेखक के मत से 'दासता' की व्यापक परिभाषा क्या है?

उत्तर : लेखक का कहना है किदासता केवल कानूनी ही नहीं होती।जब दूसरों द्वारा निर्धारित व्यवहार और कर्तव्यों का पालन करना पड़े, वह भी एक प्रकार की दासता ही है।जाति-प्रथा में अपनी इच्छा के विरुद्ध पेशा अपनाना पड़ता है। यह भी एक प्रकार की दासता ही है।

VASUNDHARAHINDI.COM

प्रश्न 4) शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद आंबेडकर'समता' को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह क्यों करते हैं? इसके पीछे उसके क्या तर्क हैं?

उत्तर : व्यक्ति किस वंश में उत्पन्न होता है और उसके सामाजिक उत्तराधिकार क्या हैं, ये अलग-अलग हो सकते हैं,अर्थात् इस पर व्यक्ति काअधिकार नहीं। लेखक का मानना है कियदि सभी लोगों की अधिकतम उपयोगिता प्राप्त करनी है, तो सबको समान अवसर एवं समान व्यवहार उपलब्ध कराना चाहिए। लेखक का कहना है राजनीतिज्ञ को सब मनुष्यों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए।समता के लिए यह जरूरी है।

प्रश्न 5) सही में आंबेडकर ने भावात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है, जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन-सुविधाओं का तर्क दिया है। क्या इससे आप सहमत हैं?

उत्तर :आंबेडकर के अनुसार शारीरिक वंश परंपरा के आधार पर, सामाजिक परंपरा के आधार पर व्यक्ति-व्यक्ति में असमानता हो सकती है। वंश परंपरा और सामाजिक परिवेश के आधार पर व्यक्ति को सम्मान मिल सकता है, परंतु ये असली सम्मान नहीं।मनुष्य की महानता व्यक्ति के प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप निर्धारित होनी चाहिए। व्यक्ति के प्रयत्नों का सही मूल्यांकन तभी होगा, जब सभी को समान अवसर दियेजाएँ।जैसे- गाँव के स्कूल में पढ़ने वाले विद्यार्थी का मुकाबला महँगे स्कूल में पढ़ने वाले विद्यार्थीसे नहीं हो सकता। पहले दोनों को समान अवसर दिएजाएँ, इसके बाद जो श्रेष्ठ हो वही उत्तम व्यवहार का हकदार होना चाहिए।

प्रश्न 6) आदर्श समाज के तीसरे तत्व 'भ्रातृता' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है अथवा नहीं? आप इस भ्रातृता शब्द से कहाँ तक सहमत हैं? यदि नहीं तो आप क्या शब्द उचित समझेंगे/समझेंगी?

उत्तर : आदर्श समाज का तीसरा तत्व भ्रातृता है।भ्रातृता संस्कृत का शब्द है, जिसका अर्थ है भाईचारा। इसमें स्त्रियों के बारे में प्रत्यक्ष रूप से कुछ नहीं कहा गया, पर इस शब्द में स्त्रियाँ भी आती हैं, क्योंकि कोई भी समाज स्त्री व पुरुष दोनों से बनता है। हम भ्रातृता शब्द से सहमत हैं।भ्रातृता के स्थान पर अधिक से अधिक भाईचारा शब्द लिया जा सकता है।

प्रश्न 7)डॉ.आंबेडकर की कल्पना के आदर्श समाज के तीन बिंदुओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर: डॉ.आंबेडकर की कल्पना के आदर्श समाज के तीनबिंदु हैं- स्वतंत्रता, समता और भ्रातृता का भाव।आंबेडकर के अनुसार व्यक्ति कोसंपत्ति रखने, जीविकोपार्जन के औजार तथा सामान रखने की स्वतंत्रता है, परंतु अपना व्यवसाय चुनने की स्वतंत्रता नहीं। यह एक प्रकार की दासता ही है।

आंबेडकर के अनुसार सबको समान अवसर दियेजाएँ। उसके बाद ही जो श्रेष्ठ हो, वही उत्तम व्यवहार का हकदार होगा।

भ्रातृता या भाईचारा दूध-पानी के मिश्रण की तरह होना चाहिए। इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है, जिसमें सभी के प्रति श्रद्धा तथा सम्मान का भाव हो।

प्रश्न 8) आदर्श समाज की स्थापना में डॉ.आंबेडकर के विचारों की सार्थकता पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर : आंबेडकर के आदर्श समाज में किसी को सम्मान उसके जन्म व जाति के आधार पर नहीं मिलेगा, बल्कि सब को समान अवसर दिए जाएँगे। उसके बाद व्यक्ति अपनी रुचि व योग्यता के अनुसार व्यवसाय चुनेगा। समाज में सब को सम्मान दिया जाएगा।ये आदर्श समाज सुखी समाज होगा।

प्रश्न 9)डॉ. आंबेडकर के आदर्श समाज की कल्पना में भ्रातृता का महत्व स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : आदर्श समाज के लिए भ्रातृतायाभाईचारा आवश्यक है। भाईचारे का अर्थ है समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए कि होने वाला प्रत्येक परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुँचे। सभी आपस में दूध-पानी की तरह घुले-मिले होने चाहिए। सब के प्रति सम्मान का भाव होना चाहिए।भ्रातृता का दूसरा नाम लोकतंत्र ही है।

* * * * *

VASUNDHARAHINDI.COM